चन्द्रसेन विराट

संध्या आज उदास है	संध्या आज प्रसन्न है
पहले शिशु के मृत्युशोक से भरी हुई कोई मां आंगन में बैठे खोई सी वैसे ही बस संध्या आज उदास है रंग क्षितिज पर हैं कि चिता की लपटे हैं सूरज कापालिक समाधि में पैठ गया सन्नाटे का शासन है खंडहर मन पर स्मृतियों का सब दर्द नसों में बैठ गया पहली कश्ती मांझी के संग डूब गई कोई मझुअन तट पर बैठे खोई सी वैसे ही बस संध्या आज उदास है गोधूलि के संग उभरती व्याकुलता विहगों का कलरव क्रन्दन बन जाता है अपशकुनी टिटहरी चीखती रह रह कर गीत अधर पर ही सिसकन बन जाता है फेरे फिर कर दूल्हे का दम टूट गया उसकी विधवा दुलहन बैठे खोई सी वैसे ही बस संध्या आज उदास है खपरैलों से धुआं उठा है बल खाता मेरा भी तो न भीतर ही सुलगा है सांध्य सितारा अंगारा बनकर निकला आंसू के संयम की टूटी वल्गा है परदेसी के देह त्याग की अशुभ खबर आकर कोई विरहन बैठे खोई सी वैसे ही बस संध्या आज उदास है	पहले शिशु के जन्म–दिवस पर शकुर भरी कोई मां पलना झुलवाये फूली सी वैसे ही बस संध्या आज प्रेसन्न है पश्चिम के गालों पर लाली दौड़ गई चित्रकार सूरज अब शयनागार चला जाते जाते श्रंगों को दे दिये मुकुट चंचल लहरों के मुख पर सिंदूर मला पहले कश्ती को उतारते सागर में मछुअन तिलक करे मांझी को फूली सी वैसे ही बस संध्या आज प्रसन्न है गोधूली क्या केसर घुली समीरण में गाय रंभायी, गूंजे शंख शिवालों से विहग रामधुन गाते लौटे नीड़ों को रामायण के स्वर फूटे चौपालों से मनचीते हाथों से मांग सिंदूर भरे कोई दुलहन डोली बैठे फूली सी वैसे ही बस आज संध्या प्रसन्न है। निकला संध्या–तारा दिशा सुहागन है श्लथ तन पर ममता का आंचल डाल रही आंगन बालक जुड़े कहानी सुनने को नई बहू दीवट पर दीवा बाल रही बिना सूचना आ दृग परदेसी बिरहन अपना प्रिय पहचाने फूली सी वैसे ही आज संध्या प्रसन्न है।
	सम्पर्क– समय, 121 वैकुंठ धाम कालोनी खजराना कोठी, ओल्ड पलासिया इन्दौर (म.प्र.)